पद्मश्री डॉ. भवरलालजी जैन, संस्थापक 'जैन समूह' जलगांव का निधन

अत्यधिक दुःख के साथ सूचित करते हैं कि हमारे परमप्रिय संस्थापक, चेयरमेन श्री भवरलाल हिरालाल जैन, (आयु 79 वर्ष) का अल्प बीमारी से दि.25 फरवरी 2016 को मुम्बई के एक चिकित्सालय में निधन हो गया।

छोटी सी अद्भूत कल्पना से महान क्रान्ति लाने वाले इस व्यक्तित्व ने विगत 5 दशकों से अपने व्यवसाय की बुनियाद खड़ी की, उनका विश्वास था कि, प्रत्येक किसान एक उद्यमी है और उसे सम्मान पूर्वक उच्च आय प्राप्त होनी चाहिये। 50 लाख किसानों को यह सुनिश्चित करने हेतु उन्होंने कड़े परिश्रम किये, वे एक स्वप्नदृष्टा एवं कर्मयोगी थे। आज में कम्पनी उनके बताये गये पथ पर हमेशा चलने के लिये शपथबद्ध है, उनका अन्तिम संस्कार पूर्व राजकीय सम्मान के साथ शनिवार दि.27 फरवरी 2016 को दोपहर 3 बजे जैन हिल्स, जलगाँव, पर किया गया।

एक छोटे शहर से अपने पराक्रम द्वारा अरबों डॉलर की ग्रामीण बहुराष्ट्रीय संस्था को स्थापित किया, विपरित परिस्थितियों में संघर्षशील व कठोर परिश्रमी कृषकों के, वे आदर्श एवं उत्साही पथप्रदर्शक एवं समर्थक बनें, आज एक समर्पित पर्यावरणविद् व दयावान सामाजिक योद्धा अब हमारे बीच नहीं रहे।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभावान व्यक्तित्व का शब्दों में वर्णन कैसे किया जा सकता है, केवल परिश्रम के बल पर सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुये इस "माटी के लाल" द्वारा कम्पनी को विश्व की दूसरे नम्बर की ड्रीप सिंचाई कम्पनी के शीर्ष स्थान पर पहुंचाया। कृषि क्षेत्र में किसी अकेले व्यक्ति द्वारा लघु एवं सीमान्त कृषकों के उत्थान हेतु आधुनिक व सटीक तकनीक प्रदत्त किये जाने का अतुलनीय योगदान भारत का एकमात्र उदाहरण है, उन्होंने अपने व्यवसाय को सदैव नीतिपरक एवं निष्ठापूर्ण रखते हुये कृषक कल्याण का नजरिया अपनाया, उनका यह मानना था कि जो भी तकनीक लाई जाये, वह छोटे-छोटे कृषकों द्वारा अपनाये जाने योग्य हो, उन्होंने ऐसा ही किया।

वे एक ऐसे व्यक्ति भवर जी ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने काम से, मेहनत से कभी मुँह नहीं मोड़ा। हमेशा यह विश्वास रखा कि कार्य से बेहतर कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं करना उनके लिये एक अभिशाप था। यदि 'जैन इरिगेशन फॅक्ट्री' या अनुसंधान व प्रदर्शन क्षेत्र पर कोई काम नहीं हो तो फिर सामाजिक कार्य, शिक्षा उनके हदय में समाई हुई थी, उन्हें युवाओं को अच्छी शिक्षा व बेहतर सामजिक, सामयिक मूल्यों की प्रासंगिकता पर विश्वास था, जबकि आज धीरे-धीरे पश्चिमात्य संस्कृति बढ़ती जा रही है।

उनके द्वारा जलगाँव में स्थापित आवासिय स्कूल 'अनुभूति' में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा की आधुनिकतम प्रणाली, पाठयक्रम आदि को भारतीय सांस्कृतिक एवं मूल्यों को बरकरार रखते हुये 'गुरूकुल' में देखी जा सकती है।

उनका यह मानना था कि आर्थिक तंगी की वजह से योग्य बच्चों के शैक्षणिक विकास में गतिरोध नहीं आना चाहिये, इस भावना से प्रेरित होकर उन्होंने गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के बच्चों के लिये एक और स्कूल आरम्भ किया, जहाँ सैकड़ों बच्चों को मुफ्त शिक्षा, पुस्तकें, पौष्टिक भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध हैं, भविष्य के लिए श्रेष्ठ

नागरिक पल्लवित किये जा रहे है।

उनके छोटे कद-काठी में अथाह एकीकृत शक्ति विद्यमान थी। सात हार्ट अटैक, दो हृदय शल्यक्रिया, एन्जियोप्लास्टी, मष्तिष्काघात भी उन्हें प्रतिदिन 8 से 10 घंटे कार्य करने से नहीं रोक पाये, चाहे वह अनुभूति स्कूल निर्माण व संचालन कार्य हो या गांधी रिसर्च फाउन्डेशन हो, जिसे उन्होंने केवल इसलिये नहीं बनाया कि वे महात्मा गांधी की शिक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से विश्वास रखते थे, बल्कि वे सुनिश्चित करना चाहते थे कि युवा पीढ़ी नहीं भूले व उनके संदेश व कार्यों को जीवन में अपनाएँ।

अपनी अलौकिक भाषण शैली से जन-साधारण श्रोताओं को मुग्ध करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। विषय चाहे कार्य सम्बन्धी हो, राजनीतिक या सामाजिक हो, बगैर कोई कागज, नोट्स आदि की सहायता के, सिर्फ याददाश्त से आंकड़े, अवसर, प्रसंग आदि को उद्धरित्त करते हुये श्रोताओं की रूचि

शेष पृष्ठ 45 पर...

पृष्ठ 44 का शेष...पद्मश्री डॉ. भवरलालजी..

बनाये रखते थे।

अपनी पिछली अमेरिका यात्रा में ऐसी ही विद्वत्ता व धैर्य से उन्होंने 'हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस' में कृषि विषय पर एक घन्टे से अधिक सम्बोधित किया, उनके सम्बोधन से प्रेरित होकर प्रोफेसर रे.ए.गोल्डबर्ग (जॉर्ज एम.मोफेट, प्रोफे. एग्रीकल्चर एंड बिज़नेस इमेरिशस) उन्हें अपना भाई कहते थे, बाद में हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस का प्रतिनिधि मंडल, जिसमें अन्य प्रोफेसर्स व डीन का समावेश था, जैन इरिगेशन जलगाँव पधारे, हार्वर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस के स्नातकिय पाठ्यक्रम में 'जैन इरिगेशन' केस स्टडी के रूप में पढ़ाया जाता है।

विभिन्न विषयों के प्रति वे समर्पित थे व उन्होंने कई पुस्तकें लिखी। 20 वर्ष पूर्व उनके द्वारा ''व्याधिग्रस्त सामाजिक रचना'' विषय पर लिखी गई पुस्तक आज भी प्रासंगिक है।

उनकी जलसंग्रहण प्रबन्धन पर लिखी हुई पुस्तक विद्यार्थियों व जनसाधारण के लिये पाठय पुस्तक के रूप में उपयोग की जा सकती है, क्योंकि यह पुस्तक अपने आप में पूर्ण प्रासंगिक है व विचार समझने में आसान है।

उनकी अलौकिक व अद्‌भुत प्रबन्धन क्षमता से पांच महाद्वीपों में 10,000 से अधिक सहयोगियों के अथक परिश्रम से संस्थान दीर्घकालीन प्रगति पथ पर अग्रसर है। यह उनकी पुस्तक 'An Enterpreneur Deciphered' 'The Enlightened Enterpreneur' में प्रतिबिंबित है।

उनकी लिखी हुई हृदयस्पर्शी कहानी 'ती आणि मी' (मराठी, हिन्दी व अंग्रेजी संस्करण) उनके अपनी धर्मपत्नी से सम्बन्ध के प्रति सम्भवतः ऐसा अनोखा, रोचक व वर्णनात्मक दस्तावेज है, जो कि नव-दम्पत्तियों और दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने वाले दम्पत्तियों के लिये आशा, दिशा, उत्साहवर्धक, प्रेरणात्मक संदेश से ओत-प्रोत है, इस पुस्तक का तृतिय संस्करण हाल ही में प्रकाशित हुआ है। कुछ ही वर्षों में 1,20,000 से अधिक प्रतियाँ विक्रय हुई हैं।

श्री भवरलालजी (भाऊ) की अदम्य ऊर्जा और साहस ने युवा सहयोगियों और समकालीन व्यक्तियों को आश्चर्य चकित किया है। वे नई-नई तकनीक और नये साहसिक कार्य, नये उद्यम, जो समाज के लिये प्रभावी व लाभप्रद हो, अपनाने के लिये सदैव तत्पर रहते थे, उनकी कम्पनी की यह स्वीकृत नीति है कि कोई भी ऐसा व्यवसाय जो किसी को व्यसनी या कमजोर करे और चाहे वह कितना भी मुनाफे वाला हो, कभी नहीं किया जावे, हमेशा वही व्यवसाय किया जावे जो समाज व समाज के कमजोर वर्ग के लिये सकारात्मक प्रभावशाली हो।

पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता जैन धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित है, जो अहिंसा व प्रकृति के साथ जीने की शिक्षा देती है। उनका भगीरथ पराक्रम 'जैन हिल्स' को उपजाऊ और हरे-भरे स्वर्ग जैसा बनाना, लाखों पेड़ लगाकर उनको सींचना, देखभाल करना व कई एकड़ बंजर बीहड़ को उपजाऊ बनाना, एक अनूठा कार्य है।

भाऊ का वर्षाजल संग्रहण, जलसंग्रहण क्षेत्र प्रबन्धन एवं संरक्षण का उत्कृष्ठ कार्य, खान्देश जैसे सूखा-ग्रस्त इलाके के कृषि इतिहास में मील का पत्थर बन गया है। कृषि के प्रति उनके इस अलौकिक योगदान के लिये विश्वविद्यालयों द्वारा उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई तथा कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये गये, उनमें से अत्याधिक सम्मानजनक ''क्राफर्ड रीड अवार्ड'' सिंचाई तकनीक प्रसार के लिये दिया गया है, आज तक यह पुरस्कार एशिया महाद्वीप में केवल दो व्यक्तियों को प्रदान किया गया है, उनके द्वारा किये गये कार्यों के लिये राष्ट्र ने सन 2008 में उन्हें ''पद्मश्री'' से सम्मानित किया है।

भाऊ ने जैन हिल्स पर एक कृषि संस्थान भी स्थापित किया है, जहां पर एग्रोनोमिस्ट व डॉक्टरेट विशेषज्ञ देश-विदेश के कृषकों को प्रशिक्षण देने के लिये नियुक्त किये गये हैं।

उनके द्वारा सर्वोत्कृष्ट बायोटेक लेबोरेटरी भी स्थापित की गई है जहाँ कृषि क्षेत्र के विभिन्न प्रयोग व अनुसंधान किये जाते हैं, इसके परिणाम स्वरूप कुछ वर्ष पूर्व अत्यन्त उपयोगी केला, स्ट्राबेरी, अनार के टिश्युकल्चर पौधे कृषकों को उपलब्ध कराये गये है, इन पौधों की अधिक उत्पादन क्षमता व गुणवत्ता से कृषकों के आर्थिक विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

भाऊ के ऐसे विचार एवं कार्यों के लिये उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का मननशील प्रणेता माना जाता है।

इस अत्यन्त उत्कृष्ट स्वप्नदृष्टा को बिदाई देते हुये 'जिनागम' परिवार निवेदन करता है कि चाहे वे अब हमारे बीच नहीं किन्तु उनकी परम्परा से प्राप्त अथक कार्य शैली, परिश्रम और पर्यावरण के प्रति लगन, प्रेम का बीज जो उन्होंने हम सब में रोपित किया है, सदैव पल्लवित रहे, ऐसी मनोभावना के साथ सादर जय जिनेंद्र!